Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

मनुस्मृति व रामायण में सैन्य संगठन

Madhu Gupta[1]* Dr. Yogendra Kumar Bhanu[2]

[1] Research Scholar, Department of Sanskrit, Maharaja Surajmal Brij University, Bharatpur, Rajasthan

[2] Research Director, Associate Professor, Department of Sanskrit, Maharaja Surajmal Brij University, Bharatpur, Rajasthan

सार - ***मनुस्मृति हिन्दू धर्म का एक प्राचीन धर्मशास्त्र (स्मृति) है। इसे मानव-धर्म-शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामों से भी जाना जाता है। यह उपदेश के रूप में है जो मनु द्वारा ऋषियों को दिया गया। इसके बाद के धर्मग्रन्थकारों ने मनुस्मृति को एक सन्दर्भ के रूप में स्वीकारते हुए इसका अनुसरण किया है। धर्मशास्त्रीय ग्रंथकारों के अतिरिक्त शंकराचार्य, शबरस्वामी जैसे दार्शनिक भी प्रमाणरूपेण इस ग्रंथ को उद्धृत करते हैं। परंपरानुसार यह स्मृति स्वायंभुव मनु द्वारा रचित है, वैवस्वत मनु या प्राचनेस मनु द्वारा नहीं। मनुस्मृति से यह भी पता चलता है कि स्वायंभुव मनु के मूलशास्त्र का आश्रय कर भृगु ने उस स्मृति का उपवृहण किया था, जो प्रचलित मनुस्मृति के नाम से प्रसिद्ध है। इस 'भार्गवीया मनुस्मृति' की तरह 'नारदीया मनुस्मृति' भी प्रचलित है। मनुस्मृति वह धर्मशास्त्र है जिसकी मान्यता जगविख्यात है। न केवल भारत में अपितु विदेश में भी इसके प्रमाणों के आधार पर निर्णय होते रहे हैं और आज भी होते हैं। अतः धर्मशास्त्र के रूप में मनुस्मृति को विश्व की अमूल्य निधि माना जाता है।***

----------X----------

प्रस्तावना

शुक्रनीतिसार में बल (सेना) को राज्य के सात अंगों में सातवां व आखिरी स्थान प्राप्त होता है।

सेना की परिभाषा

सोमदेव सुरि के अनुसार- "जो धन दे ने और मधुर भाषण से तथा शत्रुओं के निवारण द्वारा राजा को सभी अवस्थाओं से सशक्त बनाये रखता है।" जो विपत्तियों से बचाये रखता है उसे 'बल' या 'सेना' कहते है।

बल के प्रकार

शुक्रनीतिसार में छः प्रकार के बलों का निर्देश हुआ है। (1) शरीर बल (2) शौर्य-बल (3) सैन्य बल (4) अस्त्र-बल (5) बुद्धि-बल (6) आयु बल।

जो इन बलों से युक्त होता है वह विष्णु ही माना जाता है। उपर्युक्त तीन बलों में से सैन्य-संगठन अर्थात् सैन्य-बल ही हमारे इस लेख से सम्बन्धित है अतः हम सैन्य-बल का ही विवेचन करेंगे।

मनुस्मृति व रामायण में सैन्य संगठन

दण्डव्यूहेन तन्मार्ग यायान्तु शकटेन वा।

वराहमकराभ्यां वा सूच्या वा गरूडेन वा।।[1]

युद्ध के समय सैन्य संगठन

यात्रा के समय सेना अनेक प्रकार की भू तथा अरि भय के सन्देह से विविध प्रकार की व्यूह रचना अपनाती थी। चारों ओर से भय हो तो दण्ड व्यूह (आगे सेना का अध्यक्ष, मध्य में राजा, पीछे सेनापति, दो नो पाश्वो में हाथी, उनके समीप अश्वसवार, उनके समीप पैदल, सर्वत्र समान व्यवस्था ही) द्वारा प्रस्थान करें। यदि पीछे से भय हो तो शकटव्यूह (सूची के समान अग्रभाग पीछे से मोटी) से चले। यदि पाश्व भागों से भय हो तो वराह व्यूह (अग्रभाग सूक्ष्म एवं पिछला व मध्य भाग स्थूल) और गरूड़ व्यूह (अग्रभाग सूक्ष्म, पिछला भाग पृथु, और मध्य का भाग अत्यन्त पृथु) से गमन करें। यदि आगे पीछे दोनों ओर भय हो तो सूची व्यूह (चीटियों की पंक्ति के अनुसार आगे पीछे क्रम से जहाँ टिके शूरवीर अग्रभाग में रहे) इस प्रकार गमन करें।

www.ignited.in

युद्ध के समय सैन्य यात्रा के लिए सेना के विभिन्न अंग व पदाधिकारी किस क्रम से चलते थे इस विषय में 'रामायण', 'महाभारत', 'कौटिल्य अर्थ शास्त्र' 'कामन्दक नीतिसार' जानकारी है।

अग्रे यातु बलस्यास्य नीलो मार्गमवेक्षितुम्।

वृत्तः शतसहस्रेण वानराणां तपस्विनाम्।।[2]

रामायण के अनुसार सेना के अग्रभाग को मूधन कहते थे जबकि दाये बायें के भाग पाश्र्व तथा मध्य या बीच वाला भाग कुक्षि या उरस कहलाता था। किष्किन्धा से लङ्का तक मार्ग बीहड़ वनों, दुर्लध्य पहाड़ो और समुद्र से होकर जाता था। इसलिए राम ने सुरक्षात्मक दृष्टि से सेनापति नील को अपनी सेना सहित, सेना के शेष भाग में चलने का आदेश दिया। साथ ही-

फूल मूलवतां नील शीतकानन वारिणा।

पथा मधुमता चाशु सेनां सेनापते नय।।[3]

इस अग्रगामी टुकड़ी का यह भी दायित्व था कि पीछे आने वाली सेना के लिए ऐ से ही रास्तों को चुनें जो आग, फल व पानी आदि से परिपूर्ण हो।

यातु वानरवाहिन्या वानरः प्लवतां वरः।

पालयन् दक्षिणं पाश्र्वमृषभो वानरर्षभः।।[4]

पैदल सेना के दाहिने पाश्र्व का ने तृत्व हाथी, गवय व गवाक्ष आदि सेनाधिकारी अपनी सेना सहित कर रहे थे। वामपक्ष का नेतृत्व गन्धमादन नामक सेनाध्यक्ष के हाथ में था। सर्वोच्च सेना के अधिनायक राम, लक्ष्मण और सुग्रीव सहित सेना के मध्य भाग (उरस) में वर्तमान और स्वयं राम खतरों से भली भां ति सुरक्षित रहें। क्योंकि अभियान की सफलता उन्हीं के कुशल श्रम पर निर्भर थी। सेना के पृष्ठभाग में ऋतुराज बाम्बवान् सुषेण और वेगदर्शी यूथपति चल रहे थे। इन सभी का कर्तव्य था कि सैनिकों को निरन्तर सचेष्ट रखें और उन्हें कूच करते रहने का प्रोत्साहन देते रहे।

रामायण के अनुसार मार्ग मार्ग के नदी-नालों को पार हेतु हाथी, पुल, नौका काष्ठ के बेड़े तथा चमड़े के मशक आदि साधनों का प्रयोग किया जाता था। कौ टिल्य भी इसी बात का समर्थन करते हैं इनका मानना है कि यदि पार उतरने के घाटों को शत्रु ने रोक रखा हो, तो हाथी और अश्वों से रात्रि के समय किसी अन्य मार्ग से सेना को पार-उतार दे जल रहित प्रदेश में यात्रा के समय गाड़ी या चैपायों पर मार्ग की आवश्यकता के अनुसार जल को ही साथ ले ले। रघुवंश में हाथियों द्वारा नदी पार करने का उल्लेख मिलता है।

यतश्च भयामाशङ्केततो विस्तारज्येष्ठबलम्।

पदमेन चैन व्यूहेन निषिशेत यदा स्वयम्।।[5]

जिस और से भय की आशंका करे उसी ओर से सेना का विस्तार करें। और पद्म व्यूह से ही निरन्तर स्वयम् शत्रु के नगर में प्रवेश करें।

सेनापतिबलाध्यक्षौ सर्वदिक्षु निवेशयेत्।

यतश्च भयमाशङ्केप्राथी तां कल्पयेद्दिशम्।।[6]

सभी दिशाओं में सेनापति और बलाध्यक्ष की नियुक्त करे और जिस ओर से भय की आशंका हो उस दिशा में पूर्व दिशा कथन के लिए कल्पना करें।

जिन गुल्मों के स्वामी कुलीन एवं सम्मानित हो और जिनके आने-जाने के सम्मान के लिए बाजे बजते हो जो युद्ध में प्रवीण और निर्भय हो, जिनको कोई भे दित ना कर सके ऐसी सेना की टुकड़ियों, सेनापति व बलाध्यक्षों को कुछ दूर राजा स्थापित करे जिससे व शत्रु को इधर-उधर से प्रविष्ट ना होने दे। और शत्रु की चेष्टा को भली-भाँ ति जाने।

यदि राजा के योद्धा संख्या में कम हो तो वे सब एक ही स्थान पर मिलकर शत्रु से युद्ध करें यदि योद्धाओं की संख्या अधिक हो तो ये युद्ध का क्षेत्र विस्तृत करने के उद्देश्य से चारों दिशाओं में फैल जायें इन योद्धाओं का सूचीव्यूह अथा वज्रव्यूह रचकर युद्ध कराए।

युद्धारम्भ के पूर्व अपनी सेना को उचित निर्देशादि देना आवश्यक होता है। ये निर्देश सेना विशेष तथा परिस्थिति विशेष में अलग-अलग हुआ करते है राम की सेना में वानर, रीछ, राक्षस (विभीषण तथा उसके चार मंत्री) तथा मनुष्य (राम-लक्ष्मण) सभी थे। उसमें युद्ध भूमि में कठिनाई उपस्थित हो सकती थी। अतएव राम ने अपनी बुद्धिमता से सेना का एक प्रतीक बनाया वानर-वेष। पूरी सेना वानर के रूप में लड़े, केवल सात व्यक्ति राम-लक्ष्मण, विभीषण व उसके चार मंत्री मनुष्य के रूप में रहे।

वयं तु मानूषणीव सप्त योत्स्यामहे परान्

www.ignited.in

अहमेव सह भ्राता लक्ष्मणेन महीयसा।।

आत्मना पञ्चमश्यायं सखा मम विभीषणः

स रामः कृत्यसिद्धयर्थमेवयुक्ता विभीषणम्।।

यद्यपि सेना में राम का स्थान निरतिशयरूपेण सर्वप्रमुख था। तथापि राम विना सबकी सलाह के लिए कोई निर्णय नहीं लेते। जब-जब ऐसे स्थल आये है राम ने सबकी सलाह ली है, भले ही बाद में अपना विचार बता कर उन्हें हिताहित समझा कर अपने ही मन का किया हो।

विभीषण को अपनी शरण में लेने के लिए राम ने सबकी सलाह (सम्मति) मांगी थी। सुग्रीव, अंगद, हनुमान, जाम्बवान, आदि सबकी राय जाने के बाद भली-भाँ ति समझाकर उनको अपनी शरण में लेने का दृढ़ निश्चय किया।

राम धर्मयुद्ध के सेनानी है। प्रतिपक्षी रावण के कपटी होने के बावजूद धोखे से युद्ध करना नहीं जानते। आक्रमण करने की सारी तैयारी पूर्व हो जाने के बाद भी वे तब तक युद्ध आरम्भ की घोषण नहीं करते, जब तक ही अंगद द्वारा इसकी सूचना नहीं भिजवा देते, क्योंकि युद्धारम्भ के पूर्व दूत द्वारा शत्रु को युद्ध के लिए आमन्त्रित करना राजधर्म!

साधारणतः अपने प्रतिपक्षी के सारथी, रथ घोड़ा आदि को मार डालने के बाद कोई भी योद्धा उसकी असमर्थता का लाभ लेकर उसकी जीवनलीला को समाप्त कर सकता। किन्तु राम धर्मयुद्ध के इतने पक्के अनुयायी है कि रावण के सारथी, रथ, घोड़ी के नष्ट हो जाने पर उसे अपने तीर का लक्ष्य नहीं बनाते, अपितु उसे वापस लौट कर थकान दूर करने के पश्चात् नया रथ तथा अस्त्र-शस्त्र लाने का आदेश देते है।

उपसंहार

अन्त में यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि युद्ध भूमि में शत्रुओं से लड़ते हुए अस्त्र-शस्त्रों से घायल हो कर प्राणों का त्याग करें। रणभूमि को छोड़कर घर पर शय्या पर पड़े हुए कफ व पित्त को उगलते हुए, दीन आचरण करते हुए जो सैनिक मरता है वह महान् पापी होता है। शूरवीरता से बढ़कर को ई उत्तम वस्तु तीनों लोकों में नही है। सब कुछ शूरवीरता में प्रतिष्ठित है। मुनिलोग दीर्घकाल तक तप करके जिस बड़े व प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करते है। शूरवीर उस पद को युद्ध में लड़कर मरते ही तुरन्त प्राप्त कर लेता है। युद्ध में वीरता के साथ लड़कर मरे हुए योद्धा की ओर सहस्रों श्रेष्ठ अप्सराएं यह कहते हुए तेजी से दौड़ पड़ती है कि यह शूरवीर मेरा है, यह मेरा ही स्वामी बने किसी दूसरे का नहीं। इसलिए युद्ध भूमि में लड़कर मरता हुआ क्षत्रिय वीर सीधे स्वर्ग को प्राप्त कर लेता। अतः उसके लिए शोक नहीं करना चाहिए। पुलवामा युद्ध के दौरान कई वीरों की वीराङ्गनाओं द्वारा दिये वक्तव्य इसी का प्रासङ्गिक उदाहरण है।

ग्रन्थ सूची

1. मनुस्मृति 7/187
2. रामायण 6/4/10
3. रामायण 6/4/11
4. रामायण 6/4/17
5. मनुस्मृति 7/188
6. मनुस्मृति 7/189

Corresponding Author

Madhu Gupta*

Research Scholar, Department of Sanskrit, Maharaja Surajmal Brij University, Bharatpur, Rajasthan